



समृद्धि का निर्माण:

“खेत से लेकर वैश्विक प्रसिद्धि तक भारत की कॉफी कहानी”

प्रमुख बिंदु

- वैश्विक कॉफी उत्पादन में भारत 7वें पायदान पर है, जिसका योगदान 3.5% है; सालाना उत्पादन 3.6 लाख टन है, जिसमें से 70% 128 देशों को निर्यात किया जाता है।
- कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु भारत के कॉफी उत्पादन का 96% हिस्सा हैं, जिसमें कर्नाटक अनुमानित 2,80,275 मीट्रिक टन (2025-26) के साथ सबसे आगे है।
- वित्त वर्ष 2024-25 में कॉफी निर्यात रिकॉर्ड अमेरिकी डॉलर 1.8 बिलियन तक पहुंच गया, जो पिछले साल से 40% ज्यादा है; कॉफी बनाने वाले देशों में भारत 5वां सबसे बड़ा कॉफी निर्यातक है।
- भारत-यूके सीईटीए और भारत-ईएफटीए टीईपीए जैसे व्यापार समझौते यूके, स्विट्जरलैंड, नॉर्वे और आइसलैंड तक शुल्क मुक्त पहुंच सक्षम करते हैं।
- इंस्टेंट कॉफी पर जीएसटी 18% से घटाकर 5% करने से कीमतों में 11-12% की कमी आने की उम्मीद है, जिससे घरेलू मांग बढ़ेगी और बाजार पहुंच बढ़ेगी।

परिचय

कहा जाता है कि भारत की कॉफी की यात्रा लगभग 1600 ईस्वी में शुरू हुई थी, जब सूफी संत बाबा बुदन ने यमन के मोचा पोर्ट से लाए गए सात कॉफी के बीज कर्नाटक के चिकमंगलुरु की बाबा बुदन गिरी पहाड़ियों में लगाए थे। शुरुआत में इसे बगीचे की फसल के तौर पर उगाया गया, लेकिन धीरे-धीरे कॉफी की खेती बढ़ी, जिससे 18वीं सदी में व्यवसायिक बागान लगाए गए। तब से, भारतीय कॉफी दुनिया के कॉफी नक्शे पर एक अलग पहचान के साथ एक फलती-फूलती इंडस्ट्री बन गई है। भारतीय कॉफी की खेती सदाबहार और फलीदार पेड़ों के एक अनोखे दो-लेवल वाले शेड सिस्टम में की जाती है, जिसमें लगभग 50 किस्में मिट्टी की सेहत और बायोडायवर्सिटी को बढ़ाती हैं। पश्चिमी और पूर्वी घाटों और उत्तर पूर्वी क्षेत्र में 4.91 लाख हेक्टेयर में उगाई जाने वाली कॉफी, पर्यावरण के लिए टिकाऊ और आर्थिक रूप से ज़रूरी बागान फसल, दोनों के तौर पर काम करती है। कॉफी सेक्टर दो मिलियन से ज्यादा लोगों की रोज़ी-रोटी चलाता है, जो खेती, प्रोसेसिंग और व्यापार में लगे हुए हैं। इसमें छोटे

किसानों का दबदबा है, जो देश की लगभग 99 प्रतिशत जोत और कुल उत्पादन का 70 प्रतिशत हिस्सा हैं। यह भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है।

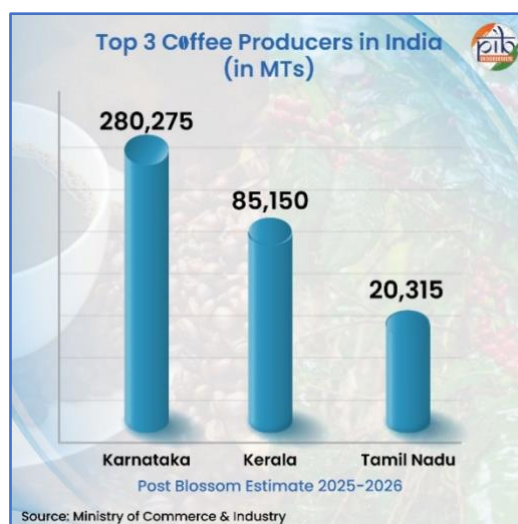
काँफी के बागान मसालों के बागानों की तरह भी काम करते हैं, जहां काँफी के साथ-साथ काली मिर्च, इलायची, वनीला, संतरा और केला जैसे कई तरह के मसाले उगाए जाते हैं। पश्चिम घाट, जो दुनिया के 25 बायोडायवर्सिटी हॉटस्पॉट में से एक है और ईस्टर्न घाट, इसके लिए अनुकूल स्थिति देते हैं, जहां अरेबिका ठंडे ऊंचे इलाकों में और रोबस्टा गर्म, नमी वाले इलाकों में खूब उगती है। भारत की रोबस्टा दुनिया भर में सबसे अच्छी मानी जाती है, जबकि इसकी अरेबिका अपनी बेहतर क्वालिटी और खास स्वाद के लिए पसंद की जाती है। काँफी बोर्ड ऑफ इंडिया के अनुसार, भारत अब दुनिया के सबसे बड़े काँफी उत्पादक में से एक है, जो काँफी का सातवां सबसे बड़ा उत्पादक है और ग्लोबल काँफी प्रोडक्शन में लगभग 3.5 प्रतिशत का योगदान देता है। भारत हर साल लगभग 3.6 लाख टन काँफी उत्पाद करता है, जिसका लगभग 70 प्रतिशत 128 देशों को निर्यात किया जाता है, जो भारतीय काँफी की बढ़ती वैश्विक मांग को दिखाता है।

भारत के काँफी क्षेत्र का अवलोकन

भारत में काँफी इंडस्ट्री मुख्य रूप से कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु जैसे काँफी उगाने वाले बड़े राज्यों में है, जो मिलकर देश के कुल काँफी उत्पादन का लगभग 96 प्रतिशत हिस्सा हैं। इनमें कर्नाटक 2,80,275 मीट्रिक टन (2025-26 के लिए पोस्ट ब्लॉसम एस्टिमेट) के प्रोडक्शन के साथ सबसे आगे है, इसके बाद केरल और तमिलनाडु का नंबर आता है।

भारत में काँफी उगाने की जगह 13 अलग-अलग एग्रो-क्लाइमैटिक ज़ोन में बंटी हुई है, जिनमें से हर एक की वैश्विक बाजार में अपनी काँफी के लिए एक खास पहचान है। इन ज़ोन को तीन बड़े ग्रुप में बांटा गया है: a)

पारंपरिक इलाके जिनमें कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु शामिल हैं; b) गैर-पारंपरिक इलाके- आंध्र प्रदेश और ओडिशा; और c) उत्तर पूर्वी इलाके, जिनमें असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा शामिल हैं। काँफी आंध्र प्रदेश, ओडिशा और उत्तर-पूर्वी राज्यों के आदिवासी इलाकों में एक ज़रूरी सोशियो-इकोनॉमिक भूमिका निभाती है, जो ग्रामीण विकास और इकोलॉजिकल बैलेंस को बढ़ावा देते हुए स्थायी तौर पर रोजी-रोटी देती है। पहचाने गए काँफी इलाकों में अनामलाई (तमिलनाडु), अराकू वैली (आंध्र प्रदेश), बाबाबुदनगिरी (कर्नाटक), चिक्कमगलुरु (कर्नाटक), कूर्ग (कर्नाटक), नीलगिरी (तमिलनाडु), शेवरॉय (तमिलनाडु), त्रावणकोर (केरल) और वायनाड (केरल) शामिल हैं।



भारत की काँफी की क्षेत्रीय पहचान

भारत के पास पांच रीजनल और दो स्पेशलिटी कॉफी के लिए जियोग्राफिकल इंडिकेशन (GI) टैग हैं, यह एक ऐसी पहचान है जो इंटरनेशनल ट्रेड में उनकी प्रीमियम वैल्यू को बढ़ाती है। देश की अलग-अलग ऊंचाई, बारिश के पैटर्न और मिट्टी की स्थिति, भारतीय कॉफी की समृद्ध विविधता और बेहतरीन क्वालिटी में योगदान देती है। भारत सरकार के कॉमर्स और इंडस्ट्री मंत्रालय के डिपार्टमेंट फॉर प्रमोशन ऑफ इंडस्ट्री एंड इंटरनल ट्रेड (DPIIT) ने पांच भारतीय रीजनल कॉफी वैरायटी को जियोग्राफिकल इंडिकेशन (GI) टैग दिए हैं: कूर्ग अरेबिका कॉफी, वायनाड रोबस्टा कॉफी, चिकमगलूर अरेबिका कॉफी, अराकू वैली अरेबिका कॉफी और बाबाबुदंगिरीस अरेबिका कॉफी। इसके अलावा, भारत की एक खास स्पेशलिटी कॉफी, मॉनसून्ड मालाबार रोबस्टा कॉफी को भी GI सर्टिफिकेशन मिला है।

ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (GI) क्या है?

जियोग्राफिकल इंडिकेशन (GI) एक तरह का IPR है जो प्रोडक्ट्स को किसी खास ज्योग्राफिकल जगह से आने वाले प्रोडक्ट्स के तौर पर पहचानता है, और उनकी खासियतें उस जगह के खास नेचुरल कंडीशन या पारंपरिक तरीकों की वजह से होती हैं। GI टैग कानूनी तौर पर सुरक्षित होते हैं और नकल और गलत इस्तेमाल को रोकने के लिए सिर्फ उस जगह के ऑथराइज्ड प्रोड्यूसर ही उनका इस्तेमाल कर सकते हैं।

स्पेशलिटी कॉफी सबसे अच्छी क्वालिटी के बीन्स होते हैं, जो अपने शानदार स्वाद, खुशबू और दिखने में खास होते हैं। ये कॉफी ध्यान से खेती, चुनकर तोड़ने और बहुत बारीकी से प्रोसेसिंग करके बनाई जाती हैं, जिससे दुनिया भर के समझदार कस्टमर्स को खास स्वाद मिलता है। अपनी खासियत और कारीगरी की वजह से, स्पेशलिटी कॉफी प्रीमियम कीमतों पर मिलती हैं और भारत के कॉफी सेक्टर का एक तेज़ी से बढ़ता हुआ हिस्सा बन गई हैं। भारतीय प्लांटर्स ने दुनिया भर में मशहूर स्पेशलिटी कॉफी बनाने की कला में महारत हासिल कर ली है, जिनमें शामिल हैं:

- **मॉनसून्ड मालाबार AA** - अपने स्मूद, हल्के स्वाद और कम एसिडिटी के लिए जानी जाती है, जिसे भारत के पश्चिमी तट पर एक खास मॉनसूनिंग प्रोसेस से बनाया गया है।
- **मैसूर नगेट्स एक्स्ट्रा बोल्ड** - भारत की सबसे अच्छी अरेबिका कॉफी में से एक, जिसके बड़े बीन्स, अच्छी खुशबू और भरपूर स्वाद होता है।
- **रोबस्टा कापी रॉयल** - एक बेहतर रोबस्टा वैरायटी जो अपने बोल्ड स्वाद, बेहतरीन क्रेमा और एस्प्रेसो ब्लेंड के लिए अनुकूल है।

इस पहचान ने भारतीय कॉफी प्रोड्यूसर्स को इलाके की कॉफी की खासियत को बनाए रखने, भारतीय कॉफी की ग्लोबल प्रोफाइल को बेहतर बनाने और अपनी प्रीमियम वैरायटी के लिए बेहतर कीमतें पाने में मदद की है। कुल मिलाकर, ये खास कॉफी भारत की परंपरा, इनोवेशन और बेहतरीन काम के तालमेल को दिखाती हैं, जिससे देश ग्लोबल कॉफी इंडस्ट्री में एक अहम खिलाड़ी बन गया है।

कॉफी बोर्ड की स्थापना

1940 के दशक में, भारत की कॉफी इंडस्ट्री को दूसरे विश्व युद्ध, गिरती कीमतों और कीड़ों और बीमारियों के बड़े पैमाने पर फैलने की वजह से एक गंभीर संकट का सामना करना पड़ा। इस सेक्टर को बचाने और फिर से ज़िंदा करने के लिए, भारत सरकार ने “कॉफी एक्ट VII ऑफ़ 1942” लागू किया, जिससे कॉमर्स और इंडस्ट्री मिनिस्ट्री के एडमिनिस्ट्रेटिव कंट्रोल में कॉफी बोर्ड ऑफ़ इंडिया की स्थापना हुई। बोर्ड में 33 सदस्य हैं, जिनमें चेयरमैन, सेक्रेटरी और चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर के साथ-साथ कॉफी उगाने वालों, व्यापारियों, क्योरिंग यूनिट्स, लेबर, कंज्यूमर्स, मुख्य कॉफी उगाने वाले क्षेत्रों की राज्य सरकारों और संसद सदस्यों के प्रतिनिधि शामिल हैं। कॉफी बोर्ड का मुख्य काम रिसर्च और डेवलपमेंट के ज़रिए पूरी कॉफी वैल्यू चेन को सपोर्ट और डेवलप करना है। टेक्निकल और फाइनेंशियल मदद, घरेलू और इंटरनेशनल मार्केट में प्रमोशन। यह प्रोडक्शन, प्रोडक्टिविटी और क्वालिटी को बेहतर बनाने, ज़्यादा वैल्यू पाने के लिए एक्सपोर्ट बढ़ाने और इंडीगेटेड कॉफी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट (ICDP) के तहत ड्राइंग यार्ड और पल्पर यूनिट्स जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर को मज़बूत करने के लिए काम करता है।

कॉफी बोर्ड की भूमिका

कॉफी बोर्ड का रिसर्च डिपार्टमेंट, जिसका हेडक्वार्टर सेंट्रल कॉफी रिसर्च इंस्टीट्यूट (CCRI) में है, और जिसके पांच रीजनल रिसर्च स्टेशन हैं, ज़्यादा पैदावार वाली, बीमारी-रोधी किस्में बनाने और उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मॉडर्न खेती की टेक्नोलॉजी को स्टैंडर्ड बनाने के लिए डेडिकेटेड है। प्रमोशन डिपार्टमेंट ग्लोबल मार्केट में भारत की मौजूदगी बढ़ाने और देश में कॉफी की खपत बढ़ाने पर फोकस करता है।

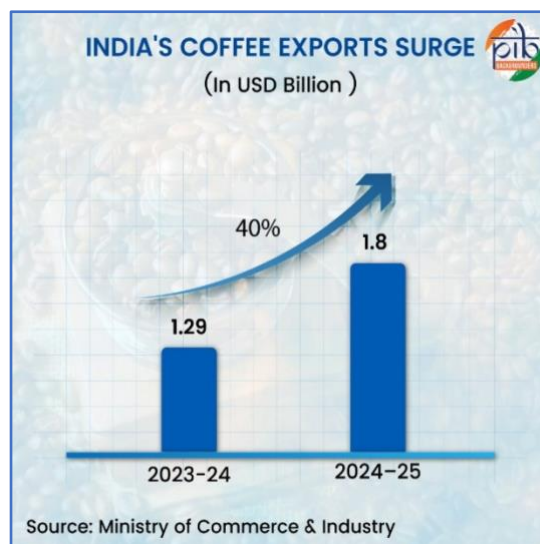
निर्यात प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत, “इंडिया ब्रांड” के रूप में खुदरा पैक में निर्यात की जाने वाली मूल्यवर्धित कॉफी के लिए और संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड, दक्षिण कोरिया, फिनलैंड, नॉर्वे और डेनमार्क जैसे दूरदराज के गंतव्यों तक उच्च मूल्य वाली हरी कॉफी के निर्यात के लिए पारगमन / माल ढुलाई सहायता प्रदान की जाती है, जबकि यूरोपीय संघ, रूस और खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) देशों के साथ मजबूत व्यापारिक संबंध बनाए रखते हैं। बोर्ड प्रमुख अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों में भारतीय कॉफी का सक्रिय रूप से प्रतिनिधित्व करता है और प्रीमियम कॉफी की पहचान करने और उन्हें वैश्विक खरीदारों से जोड़ने के लिए फ्लेवर ऑफ़ इंडिया - द फाइन कप प्रतियोगिता का आयोजन करता है। देश में, कॉफी के बारे में जागरूकता और कल्चर को बढ़ावा देने के लिए, बोर्ड बड़े शहरों में 12 इंडिया कॉफी हाउस का नेटवर्क चलाता है और नेशनल एग्जिबिशन और ट्रेड फेयर में हिस्सा लेता है, इंडियन कॉफी को प्रमोट करता है और कंज्यूमर्स को इसके हेल्थ बेनिफिट्स के बारे में बताता है।

कॉफी का निर्यात

भारत वैश्विक कॉफी व्यापार में एक अहम खिलाड़ी बनकर उभरा है। कॉफी बनाने वाले देशों में यह पाँचवाँ सबसे बड़ा कॉफी एक्सपोर्टर है और दुनिया भर के कॉफी बनाने वाले देशों से होने वाले कुल कॉफी एक्सपोर्ट में इसका हिस्सा लगभग 5 प्रतिशत है। पिछले चार सालों में, भारत का कॉफी एक्सपोर्ट लगातार अमेरिकी डॉलर 1 बिलियन से ज़्यादा रहा है, जो वित्त वर्ष 2024-25 में रिकॉर्ड अमेरिकी डॉलर 1.8 बिलियन तक पहुंच गया है, जो पिछले साल के अमेरिकी डॉलर 1.29 बिलियन से 40 प्रतिशत की

शानदार बढ़त दिखाता है। ग्लोबल जियोपॉलिटिकल चुनौतियों के बावजूद, अप्रैल-सितंबर 2025 के दौरान एक्सपोर्ट अमेरिकी डॉलर 1.07 बिलियन रहा, जो 2024 की इसी अवधि की तुलना में 15.5% ज्यादा है। भारत इंस्टेंट कॉफी प्रोडक्शन और एक्सपोर्ट के बड़े हब में से एक है, जहाँ वैल्यू-एडेड प्रोडक्ट्स कुल कॉफी एक्सपोर्ट का लगभग 38 प्रतिशत हिस्सा हैं।

दुनिया में सबसे ज्यादा ट्रेड होने वाली और इस्तेमाल होने वाली चीजों में से एक होने के नाते, कॉफी का बहुत ज्यादा आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व है। भारतीय कॉफी के लिए टॉप 5 एक्सपोर्ट डेस्टिनेशन इटली (18.09 प्रतिशत), जर्मनी (11.01 प्रतिशत), बेल्जियम (7.47 प्रतिशत), रशियन फेडरेशन (5.28 प्रतिशत), और यूनाइटेड अरब अमीरात (5.09 प्रतिशत) हैं। भारत के कॉफी एक्सपोर्ट में हाल ही में हुई बढ़ोतरी ने भारतीय कॉफी की ग्लोबल रेप्युटेशन को मजबूत किया है और ग्राहकों के लिए इनकम में सुधार किया है, खासकर मुख्य कॉफी-प्रोड्यूसिंग राज्यों में।



पॉलिसी और ट्रेड रिफॉर्म से कॉफी सेक्टर को बढ़ावा मिलेगा

कॉफी उत्पादों पर जीएसटी में कमी

कॉफी एक्सट्रैक्ट, एसेंस और इंस्टेंट कॉफी पर GST को 18 परसेंट से घटाकर 5 परसेंट करना इस सेक्टर के लिए एक बड़ा फाइनेंशियल कदम है। इस बदलाव से रिटेल कीमतों में 11-12 परसेंट की कमी आने, घरेलू खपत को बढ़ावा मिलने और छोटे प्रोसेसर के लिए प्रॉफिट बढ़ने की उम्मीद है। इस पहल से घरेलू मार्केट बेस भी मजबूत होगा और भारत में प्रति व्यक्ति कॉफी की खपत बढ़ेगी।

भारत-यूनाइटेड किंगडम व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (सीईटीए)

हाल ही में हुआ इंडिया-UK कॉम्प्रिहेंसिव इकोनॉमिक एंड ट्रेड एग्रीमेंट (CETA) दोनों देशों के बीच व्यापार के रिश्तों में एक अहम पड़ाव है। यह समझौता इंडियन वैल्यू-एडेड कॉफी, खासकर इंस्टेंट कॉफी के लिए टैरिफ में फायदे देता है। यूनाइटेड किंगडम, जो पहले से ही इंडिया के कॉफी एक्सपोर्ट का 1.7 परसेंट हिस्सा है, अब रोस्ट एंड ग्राउंड और इंस्टेंट कॉफी के लिए ड्यूटी-फ्री एक्सेस देगा, जिससे भारतीय निर्यातक जर्मनी, स्पेन और नीदरलैंड के सप्लायर के साथ ज्यादा अच्छे से मुकाबला कर पाएंगे। यह एग्रीमेंट UK को वैल्यू-एडेड कॉफी प्रोडक्ट के एक्सपोर्ट को बढ़ाने के लिए एक मजबूत नींव बनाता है।

भारत-ईएफटीए व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौता (टीईपीए)

इंडिया-यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (EFTA) ट्रेड एंड इकोनॉमिक पार्टनरशिप एग्रीमेंट (TEPA), जिस पर 10 मार्च 2024 को साइन हुआ था और जो 1 अक्टूबर 2025 से लागू है,

भारत का पहला फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) है जो निवेश को रोजगार सृजन से जोड़ता है। TEPA के तहत, स्विट्जरलैंड, नॉर्वे और आइसलैंड भारत से सभी कॉफी इंपोर्ट पर जीरो परसेंट इयूटी देंगे। TEPA, EFTA मार्केट में भारतीय कॉफी के लिए सबसे अच्छा मार्केट एक्सेस देता है। TEPA कॉफी एक्सपोर्टर्स को स्विट्जरलैंड, नॉर्वे और आइसलैंड के प्रीमियम मार्केट तक पहुंचने में मदद कर सकता है, जिससे भारत की हाई-क्वालिटी, शेड में उगाई गई, हाथ से चुनी गई और धूप में सुखाई गई कॉफी को EFTA मार्केट में लाने का मौका मिलेगा। यह एग्रीमेंट रोस्टेड और इंस्टेंट कॉफी जैसी वैल्यू-एडेड कॉफी के एक्सपोर्ट के मौकों को बढ़ाता है।

फाइन कप अवार्ड्स: भारत की सबसे बेहतरीन कॉफी को पेश करते हुए

द फ्लेवर ऑफ़ इंडिया - द फाइन कप अवार्ड्स, जिसे 2002 में कॉफी बोर्ड ऑफ़ इंडिया ने शुरू किया था, भारतीय कॉफी में बेहतरीन काम का जश्न मनाता है और इसका मकसद देश की सबसे अच्छी कॉफी को दुनिया भर में पहचान दिलाना है। इस पहल के तहत, कॉफी बोर्ड ने 2022-23 में नो योर कॉफी (KYK) प्रोग्राम शुरू किया, जो छह कैटेगरी में बेहतरीन कॉफी को जांचने और इनाम देने के लिए एक खास कप क्वालिटी इवैल्यूएशन प्लेटफॉर्म है।

एक बड़ी कामयाबी में, कोरापुट कॉफी ने KYK 2024 के दौरान दो फ़ाइन कप अवार्ड जीते, एक वॉशड प्रोसेस और एक नेचुरल प्रोसेस कैटेगरी के लिए। इस पहचान ने ब्रांड की इज़्ज़त बढ़ाई है और कोरापुट कॉफी को भारत के स्पेशल कॉफी मैप पर मज़बूती से जगह दिलाई है, जो ओडिशा की आदिवासी और ऊंचाई वाली कॉफी की बढ़ती पहचान को दिखाता है।

कोरापुट की कॉफी के ज़रिए बदलाव

ओडिशा के कोरापुट जिले के नंदपुर ब्लॉक के पड़वा गांव के परजा समुदाय के सदस्य श्री बलराम हंतल ने अपने वतन लौटने से पहले कभी विजयवाड़ा और बेंगलुरु में मज़दूरी की थी। 2005-06 में, उन्होंने दो एकड़ ज़मीन पर कॉफी लगाई, और 2010-11 तक, उनकी कोशिशों का नतीजा मिलने लगा। कॉफी बोर्ड की मदद से, उन्हें अपनी कॉफी चेरी को प्रोसेस करने के लिए एक बेबी पल्पर मशीन मिली। ट्राइबल डेवलपमेंट को-ऑपरेटिव कॉर्पोरेशन ऑफ़ ओडिशा लिमिटेड (TDCCOL) से मिले सपोर्ट से उनकी उपज के लिए सही और स्थिर कीमत पक्की हुई। आज, श्री हंतल कॉफी और काली मिर्च की खेती से हर साल लगभग ₹3 लाख कमाते हैं और उन्होंने अपने परिवार के लिए एक पक्का घर भी बनाया है। उनकी बेटियाँ हायर एजुकेशन कर रही हैं, और उनका बेटा जवाहर नवोदय विद्यालय, कोरापुट में पढ़ता है। उनकी कहानी सस्टेनेबल कॉफी खेती की बदलाव लाने की क्षमता का सबूत है, जो उनके परिवार के भविष्य में रोज़ी-रोटी की सुरक्षा, सम्मान और उम्मीद लाती

कॉफी खरीद और मार्केटिंग में TDCCOL की भागीदारी

ओडिशा सरकार के ST & SC डेवलपमेंट डिपार्टमेंट के तहत 1967 में बनी ट्राइबल डेवलपमेंट को-ऑपरेटिव कॉर्पोरेशन ऑफ ओडिशा लिमिटेड (TDCCOL) आदिवासी कल्याण के लिए राज्य की सबसे बड़ी को-ऑपरेटिव संस्था है। यह माइनर फॉरेस्ट प्रोड्यूस (MFP) और सरप्लस एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस (SAP) के लिए सही दाम पक्का करके आदिवासी समुदायों के आर्थिक हितों की रक्षा करने में अहम भूमिका निभाती है, साथ ही पूरे ओडिशा में सस्टेनेबल आजीविका को बढ़ावा देती है।

2019-20 से, TDCCOL ने कोरापुट ज़िले में कॉफी खरीदने में एक अहम भूमिका निभाई है, जो अच्छी क्वालिटी वाली अरेबिका कॉफी के लिए अपनी अच्छी स्थितियों के लिए जाना जाता है। इस संगठन ने सेंट्रलाइज़्ड मंडियों से डोरस्टेप खरीद की ओर कदम बढ़ाया, जिससे सही कीमत पक्की हुई और आदिवासी किसानों के लिए वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला।

प्रमुख बातें-

- **एंड-टू-एंड मैनेजमेंट:** खरीद से लेकर सुखाने, ग्रेडिंग और मार्केटिंग तक, पूरी वैल्यू चेन को मैनेज करना।
- **सही कीमत:** सालाना खरीद रेट ICTA मार्केट प्राइस के हिसाब से, किसानों के बैंक अकाउंट में सीधे पेमेंट के साथ।
- **सामाजिक-आर्थिक असर:** इस पहल से मजबूरी में माइग्रेशन कम हुआ है और गांव के लोगों की रोजी-रोटी बेहतर हुई है।
- **वैल्यू एडिशन:** 11 सितंबर 2019 को “कोरापुट कॉफी” ब्रांड लॉन्च किया गया, जो सस्टेनेबल तरीके से सोर्स की गई, रिच-फ्लेवर वाली कॉफी देता है जिसे अब देश भर में पहचान मिली है।

TDCCOL ने पूरे ओडिशा में आठ “कोरापुट कॉफी” कैफ़े खोले हैं - चार भुवनेश्वर में, एक पुरी में, दो कोरापुट में, और एक ओडिशा भवन, नई दिल्ली में, जिससे ब्रांड की खास पहचान और सस्टेनेबल शुरुआत को और बढ़ावा मिलता है।

कॉफी बोर्ड ऑफ इंडिया भी इंडीग्रेटेड कॉफी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट (ICDP) के ज़रिए TDCCOL को सपोर्ट करता है, और ड्राइंग यार्ड और कॉफी पल्पर जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए टेक्निकल और फाइनेंशियल मदद देता है।

भविष्य का नज़रिया: कॉफी उत्पादन में नई ऊंचाइयों को छूना

भारत की कॉफी इंडस्ट्री में ज़बरदस्त वृद्धि होने की उम्मीद है, और 2028 तक पूरे मार्केट के 8.9 परसेंट की कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट (CAGR) से बढ़ने का अनुमान है। आउट-ऑफ-होम कॉफी सेगमेंट में और भी तेज़ी से ग्रोथ हो रही है, जिसके 15 से 20 परसेंट CAGR से बढ़ने की उम्मीद है, और 2028 तक इसकी वैल्यू अमेरिकी डॉलर 2.6 बिलियन से अमेरिकी डॉलर 3.2 बिलियन के बीच पहुंच जाएगी। इसके अलावा, कॉफी बोर्ड ऑफ इंडिया ने 2047 तक देश में कॉफी प्रोडक्शन को 9 लाख टन तक बढ़ाने का एक बड़ा लक्ष्य रखा है, जिससे भारत दुनिया का एक बड़ा कॉफी प्रोड्यूसर बनकर उभरेगा।

निष्कर्ष

भारत की कॉफी की कहानी मज़बूती, इनोवेशन और बदलाव की है। बाबा बुदन गिरी पहाड़ियों में छोटी सी शुरुआत से लेकर दुनिया भर में नाम कमाने तक, भारतीय कॉफी क्वालिटी, सस्टेनेबिलिटी और सबको साथ लेकर चलने वाले विकास का प्रतीक बन गई है। देश की खास इकोलॉजिकल विविधता और लाखों छोटे किसानों के कमिटमेंट ने एक ऐसा कॉफी माहौल बनाया है जो परंपरा और मॉडर्न काम का मेल है। रिसर्च, डेवलपमेंट, एक्सपोर्ट प्रमोशन और घरेलू बाज़ार को बढ़ाने के लिए अपने लगातार सपोर्ट के ज़रिए, भारतीय कॉफी बोर्ड ने इस बदलाव को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है।

मानसून मालाबार, मैसूर नगेट्स और कोरापुट कॉफी जैसी खास कॉफी के आने से भारत की पहचान प्रीमियम, दुनिया भर में मुकाबला करने वाली किस्मों के प्रोड्यूसर के तौर पर मज़बूत हुई है। ओडिशा में TDCCOL जैसी आदिवासी कोऑपरेटिव की सफलता ने यह दिखाया है कि कॉफी कैसे सामाजिक-आर्थिक मज़बूती और सस्टेनेबल रोज़ी-रोटी बनाने का एक ज़रिया हो सकती है। इसके अलावा, GST में कमी और इंडिया-UK CETA और इंडिया-EFTA TEPA जैसे फ्री ट्रेड एग्रीमेंट जैसे पॉलिसी उपायों ने वैल्यू-एडेड कॉफी एक्सपोर्ट के मौकों को और बढ़ाया है, जिससे ग्लोबल कॉफी इंडस्ट्री में इंडिया का असर बढ़ रहा है।

जैसे-जैसे इंडस्ट्री 2047 तक प्रोडक्शन को 9 लाख टन तक बढ़ाने के साफ़ विज़न के साथ आगे बढ़ रही है, भारत का कॉफी सेक्टर एक नए दौर की दहलीज़ पर खड़ा है। क्वालिटी, सस्टेनेबिलिटी और बराबर ग्रोथ पर अपने फ़ोकस के साथ, भारत एक ऐसी सक्सेस स्टोरी बना रहा है जो अपनी मिट्टी में गहराई से जुड़ी हुई है और जिसे दुनिया भर में सराहा जाता है।

संदर्भ

पीएम इंडिया

https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-the-127th-episode-of-mann-ki-baat/

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

निर्यात

https://niryat.gov.in/#?start_date=202404&end_date=202503&sort_table=export_achieved-sort-desc&commodity_group_id=1&commodity_id=2

भारतीय कॉफी बोर्ड

<https://coffeeboard.gov.in/index.aspx>

https://coffeeboard.gov.in/RTI/Annual%20Report2023_2024_Hindi_Eng.pdf

<https://coffeeboard.gov.in/coffee-regions-india.html?page=CoffeeRegionsIndia#int>

https://coffeeboard.gov.in/RTI/CB%20Eng-AR_2022_23%20Final.pdf

<https://coffeeboard.gov.in/coffee-statistics.html>

<https://coffeeboard.gov.in/Specialitycoffee.aspx>

<https://coffeeboard.gov.in/coffee-regions-india.html>

<https://coffeeboard.gov.in/aboutus.aspx>

https://coffeeboard.gov.in/Publications/July14/Cover%20Story_pg18_23.pdf

इंडियन ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन

<https://ibef.org/exports/coffee-industry-in-india>

<https://ibef.org/giofindia>

पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2182006>

<https://www.pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1569831&ref=finshots.in>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2182006>

<https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=154945&ModuleId=3>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2173138>

पीके/केसी/वीएस